International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030, Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 2; Issue 3; May 2017; Page No. 185-186

महर्षि वाल्मीकि कृत रामायण में धर्म

डॉ0 अशोक कुमार दुबे

एसोशिएट प्रोफेसर संस्कृत–विभाग, बी0एस0एन0वी0 पी0जी0 कॉलेज लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत।

सारांश
धर्म मानव जीवन का अनिवार्य अंग है। धर्म स्व से उठकर अपनी आत्मा का सर्वव्यापक जगत आत्मा के साथ सम्बन्ध स्थापित करता है। रामायण में मानव कल्याण सम्बन्धी अनेक धार्मिक नीतियों का आख्यान है जो वर्तमान समय में भी समाज और हमारे जीवन को दशा और दिशा प्रदान करता है।

मूल शब्दः महर्षि वाल्मीकि, धर्म।

प्रस्तावना
धर्म वस्तुतः मानव के द्वारा अपनाया जाने योग्य एक ऐसा जीवन मार्ग है, जिस पर चलता हुआ मानव अपना और दूसरे का हित साधन कर सकता है। डॉ0 राधा कृष्णनन ने धर्म का स्वरूप स्पष्ट करते हुए लिखा है–''कि धर्म सम्पूर्ण जीवन की पद्धति है। वह नश्वर में अनश्वर तथा अचिर में चिर का अनुसंधान है। धर्म जीवन का स्वभाव है।''
हमारे धर्म गन्थों में भी धर्म को यतोऽभ्युदय निःश्रेयसिद्धिः स धर्मः। कह कर मानव जीवन के विकास एवं कल्याण का मूल आधार माना गया है। वास्तविकता तो यह है कि धर्म के बिना हम सुख–पूर्वक जीवन निर्वाह नहीं कर सकते है। धर्म ही एक ऐसा पथ–प्रदर्शक है जो हमें हर समय सन्मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता रहता है। मनु जी ने भी धर्म के महत्त्व का प्रतिपादन करते हुए लिखा है कि नष्ट हुआ धर्म ही मनुष्य का नाश करता है सुरक्षित धर्म ही मनुष्य की रक्षा करता है। इसलिए धर्म को नष्ट नहीं करना चाहिए, जिससे नष्ट हुआ धर्म हमें नष्ट न कर दे। धर्म ही एक ऐसा मित्र है जो मरने पर साथ जाता है। अन्य सब कुछ तो शरीर के साथ ही नष्ट हो जाता है।
इस प्रकार धर्म मानव को ईश्वर के साक्षात्कार की प्रेरणा देता है। ऐसी स्थिति में मानव निज–पर विषयक संकीर्ण दृष्टिकोण से ऊपर उठ कर अपनी आत्मा का सर्व व्यापक जगदात्मा के साथ सम्बन्ध स्थापित करने का प्रयास करता है।
वाल्मीकि रामायण एक ऐसा विशाल ग्रन्थ है जिसमें धार्मिक आस्थाओं के विविध रूप देखने को मिलते है। महर्षि वाल्मीकि एक हितवादी महापुरूष थे। अतः मानव कल्याण के लिए अनेक प्रकार से धार्मिक नीतियों का आख्यान उनको पूर्णतया मान्य था।
रामायण के अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि उन दिनों जनता में धार्मिक भावना अत्यन्त प्रबल थी जो जीवन में विविध क्षेत्रों में रूपायित हो उठी थी। किसी कार्य के प्रारम्भ में एवं किसी शुभ अवसर पर उसके दर्शन हो जाते है जब महाराज दशरथ वशिष्ठ की अनुमति से राम के राज्यभिषेक का निर्णय कर लेते है तो वशिष्ठ श्री राम को नियमपूर्वक व्रत का पालन करने का आदेश देते है।

गच्छो पवासं काकुत्स्थं कारयाद्य तपोधन।
श्रेयसे राज्यलाभाय वध्वा सह यतव्रत।।

श्रीराम कुलगुरू वशिष्ठ की आज्ञा पाकर उपासना में तल्लीन हो जाते है। सर्वप्रथम वे अपनी पत्नी के साथ श्री नारायण की उपासना करते है।

गते पुरोहिते समः स्नातो नियतमानसः।
सह पत्न्या विशालाक्ष्या नारायणमुपागमत्।।

यथा सीता जी के सहित उन्होंने हविष्य देवता की प्रसन्नता के लिए विधि पूर्वक उस हविष्य की आहुति दी।

प्रगृह्य शिरसा पात्रीं हविषो विधिवत् ततः।
महते दैवतायाज्यं जुहाव ज्वलितानले।।

तत्पश्चात् अपने प्रिय मनोरथ की सिद्धि का संकल्प लेकर उन्होंने उस यज्ञ शेष हवष्यि भक्षण किया और मन को संयम में रखकर शान्ति के साथ सीता रहित भगवान विष्णु के सुन्दर मन्दिर में श्री नारायण देव का ध्यान करते हुए कुश की चटाई पर शयन किया।

शेषं च हविषस्तस्य प्राश्याशास्यातमनः प्रिसतम्।
ध्यायन्नारायनं देवं स्वास्तीणे कुशसंस्तरें।।

इसके अनन्तर प्रातःकालीन संध्योपासना करके उन्होंने एकाग्र चित होकर जप किया।

त श्रृण्वन् सुखा वाचः सूतमागधर्वान्दनाम्।
पूर्वा संध्यामुपासीनों जजाप सुसमाहितः।।

श्री राम के राज्याभिषेक की शुभ सूचना पाकर कौसल्या ने भी प्राणायाम द्वारा परम पुरूष नारायण का ध्यान किया था। जब श्री राम ने अपनी माँ के पास पहुँच कर अपने वनवास की सूचना दी थी, उस समय भी उनकी माँ पुत्र की कल्याण कामना से रात भर जागृत रहकर एकाग्र चित से विष्णु की पूजा कर रही थी।

कौसल्यापि तदा देवी रात्रिं स्थित्वा समाहित।
प्रभाते चाकरोत् पूजां विष्णोः पुत्रहितैषिणी।।

श्री राम लक्ष्मण एवं सीता के साथ वन यात्रा में जब गंगा पार करने के लिए नाव में बैठते है तो सीता जी ने अपने पति की कल्याण कामना करते हुए देवी गंगा से मन ही मन प्रार्थना की थी कि–हे स्वर्गभूतल और पाताल तीनों मार्ग पर विचरण करने वाली देवी पुरूष सिंह श्री राम जब वन से सकुशल लौट कर अपना राज्य प्राप्त कर लेंगे, तब मैं पुनः आपको मस्तक झुकाऊँगी और आपकी स्तुति करूँगी। सीता ने गंगा से प्रार्थना करते हुए ब्राह्मणों और दीनों को अनेक प्रकार से दान देने और गंगा के किनारे विद्यमान तीर्थ एवं मन्दिर आदि की पूजा आदि करने की प्रतिज्ञा की थी। गंगा के प्रति की गई सीता की इस प्रार्थना से यह सिद्ध होता है कि उन दिनों लोगों में देवी देवताओ में प्रति की गई प्रार्थना एवं पूजा में पूर्ण विश्वास था। श्री राम जब चित्रकूट पहुँचकर लक्ष्मण द्वारा तैयार की गई पर्णशाला को देखते है तो लक्ष्मण से कहते है हे लक्ष्मण हम गजकन्द का मृदा लेकर उसी से पर्णशाला के अधिष्ठाता देवताओं का पूजन करेंगे क्योंकि दीर्घ जीवन की इच्छा करने वाले पुरूष को वास्तु शान्ति अवश्य करनी चाहिए। वे लक्ष्मण को सब प्रकार से शास्त्रोक्त विधि का अनुष्ठान करते हुए धर्म का पालन का ही आदेश देते है। फिर श्री राम स्वयं शौच संतोष आदि नियमों का पालन करके वास्तु यज्ञ के लिए उपयुक्त मंत्रों का पाठ एवं जप करते हैं।

रामः स्नात्वा तु नियतो गुणवांजपको विदः।
संग्रहेणाकरोत् सर्वान मंन्त्रान् सत्रावसालिकान्।।

वन में आये हुए भरत से राम का यह प्रश्न ''गुरूजनों, वृक्षों, तपस्वियों, देवताओं, अतिथियों चैत्य वृक्षों और समस्त पूर्ण काम ब्राह्मणों को नमस्कार करते हो न'' यह सिद्ध करता है कि वाल्मीकि की दृष्टि में देव–पूजा अत्यन्त प्रमुख कार्य है। जिसे वे हर परिस्थिति में मानव के लिए अनिवार्य मानते हैं।
यह उपासना अथवा पूजा पद्धति आर्यो में ही नहीं राक्षसों में भी व्याप्त थी। और राक्षस विविध देवी–देवताओं की पूजा करते थे। युद्ध क्षेत्र में पहुँच कर रावण पुत्र इन्द्रजीत ने रथ से उतर कर पृथ्वी पर अग्नि की स्थापना करके चन्दन, फूल तथा लावा आदि के द्वारा अग्निदेव का पूजन किया था। तथा उसके बाद विधिपूर्वक श्रेष्ठ मन्त्रों का उच्चारण करते हुए उस अग्नि में हविष्य की आहुति दी थी। और एक काले रंग के जीवित बकरे को भी अग्नि को समर्पित किया था। युद्ध क्षेत्र में अगस्त्य मुनि ने राम को आदित्य हृदय स्तोत्र का पाठ करने के लिए प्रेरित किया था।
इस प्रकार मानव के चरित्र की पवित्रता सर्वत्र, ईश्वर में विश्वास समस्त प्राणियों में ईश्वर के स्वरूप का दर्शन, अपने निर्दिष्ट कर्तव्य का समुचित रूप से पालन आदि कार्य भी इस धर्म की कोटि में ही आते है।

उद्देश्य

महर्षि ने धर्म को अत्यन्त व्यापक रूप में देखा है। उनके द्वारा उपदिष्ट धार्मिक नीति एक ऐसा सामान्य मानव धर्म है जिसमें प्राणी मात्र का कल्याण निहित है। वह धर्म जो मानव को मानव के प्रति प्रेम त्याग एवं निःस्वार्थ के भाव को उत्पन्न करता है और उस धर्म से ही मनुष्य वस्तुतः मनुष्य बनता है।

निष्कर्ष

अतः धर्म का अवलम्बन मानव के लिए अनिवार्य है। इसके माध्यम से इस जीवन में भी सुख भोगते हुए वह पारलौकिक जीवन को भी समृद्ध बनाता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. वाल्मीकि रामायण–अयोध्या काण्ड–5/2
   गच्छो पवासं काकुत्स्थं कारयाद्य तपोधन।
   श्रेयसे राज्यलाभय वध्वा सह यतव्रत।।
2. वहीं 6/5
   गते पुरोहिते समः स्नातो नियतमानसः।
   सह पल्या विशालाक्ष्या नारायणमुपागमत्
3. वही 6/2
   प्रगृह्य शिरसा पात्रीं हविषो विधिवत् ततः।
   महते दैवतायाज्यं जुहाव ज्वलितानले।।
4. वाल्मीकि रामायण–अयोध्या काण्ड–6/3, 4
   शेषं च हविषस्तस्य प्राश्याशास्यातमनः प्रिसतम्।
   ध्यायन्नारायनं देवं स्वास्तीणें कुशसंस्तरें।।
   वाग्यतः सह वैदेह्या भूत्वा नियतमानसः।
   श्रीमत्यायतने विष्णोः शिशये नरवरात्मजः।
5. वहीं 6/6
   त श्रृण्वन् सुखा वाचः सूतमागधर्वान्दनाम्।
   पूर्वा संध्यामुपासीनों जजाप सुसमाहितः।।
6. वहीं 4/33
   श्रुत्वा पुष्ये च पुत्रस्य यौवराज्येडीभिपेचनम्।
   प्राणायामेन पुरूषं ध्यायमाना जनार्दनर्म।।
7. वहीं 20/14
   कौसल्यापि तदा देवी रात्रिं स्थित्वा समाहिता।
   प्रभाते चाकरोत् पूजां विष्णों पुत्रहितैषिणी।।
8. वाल्मीकि रामायण–अयोध्या काण्ड–20/17,18
   देवकार्यनिमित्तं च तत्रापश्यत् समुद्यतम्।
   दध्यक्षतघृतं चैत मोदकान् हविपस्तथा।।
   लाजान् माल्यानि शुक्लानि पायसं कृसरं तथा।
   सममिधं पूर्णकुम्भांश्च ददर्श रघुनन्दनः।।
9. वही 52/87
10. वहीं 52/88 से 90 तक
11. वही 56/22
    ऐणेयं मांसहाहृत्य शालां यक्ष्यामहे नयम्।
    कर्त्तव्यं वासतुशमनं सामित्रे चिरजीविभिः।
12. वहीं 56/23
    मृगं हत्वाडडनय शिप्रं लक्ष्मणेह शुभेक्षण।
    कर्त्तव्यः शास्त्रादृष्टो हि विधिधर्ममनुस्मर।।
13. वहीं 56/29
    रामः स्नात्वा तु नियतो गूणवांजपको विदः।
    संग्रहेणाकरेत् सर्वान मन्त्रान् सत्रावसालिकान्।।
14. वहीं 100/61
    कश्चिद् गुरूंश्च वृद्वांयच तापसान् देवतातिथीय।
    चैत्यांश्च सर्वान् सिद्धार्थान ब्राह्मणांश्च नमस्यासि।।
15. वहीं 73/31, 22
    स्थापयामास रक्षांसि रर्थ प्रति समन्ततः।
    हुतमोक्तार हुतमुक्सदृशप्रभ।।
    जुहुवे राक्षसश्रेष्ठो विधिवन्मत्रसत्तमैः।
    स हविला।जसत्कारैमोल्यगन्ध–पुरस्कृतैः।।
    जुहवे पावकं तत्र राक्षसेन्द्र पातापवान्
16. वहीं 105/3
    राम राम महाबाहो श्रृगु गुह्याम सनातनम्।
    येन सर्वानीरन् वत्स समरे विजयिष्यसे।।